

**"सुपोषित माँ अभियान" के शुभारम्भ के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष जी के उपयोग हेतु प्रारूप
भाषण**

तारीख – 29.02.2020

स्थल – कृषि मंडी उपज समिति, कोटा

मैं 'सुपोषित मां अभियान' नामक इस अभियान में अपना योगदान देने के लिए कोटा ग्रेन एंड सीड्स मार्केट एसोसिएशन, जननी सामाजिक और स्वास्थ्य संस्थान और कोटा के सभी प्रबुद्ध नागरिकों का धन्यवाद करता हूँ। यह पहल, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं में कुपोषण के दुष्परिणामों को दूर करने के लिए एक सामुदायिक प्रयास है।

मित्रो, नारी शक्ति एक ऐसी अद्भुत शक्ति है जिसकी धूरी के इर्द-गिर्द समस्त संसार का चक्र घूमता है। बिना नारी के सृष्टि की कल्पना संभव नहीं। यही कारण है कि हमारी संपूर्ण मानवता नारी के मातृ रूप का ऋणी है।

साथियो, माता सदैव पूजनीया होती है। माता साक्षात् प्रकृति रूप है, माता धरती-रूप है, जो जन्म देती है। हम कह सकते हैं कि हमारी समस्त मानव जाति का स्वास्थ्य और विकास इस बात पर निर्भर है कि माता स्वरूपा स्त्रियों का स्वास्थ्य और विकास कितना बेहतर हुआ है। इसलिए स्त्रियों को सिर्फ आदर और श्रद्धा का पात्र बनाकर और नारी शक्ति की पूजा करने से ही हम अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं कर सकते। बल्कि हम सबका और पूरे समाज का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह स्त्रियों के संपूर्ण शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए समर्पित हो।

मुझे खुशी है कि आज के दौर में स्त्रियां सशक्त हुई हैं, सबल हुई हैं। अब वे घर की चहारदीवारियों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि हर चुनौती का सामना कर रही हैं। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि स्त्रियां अब अपने करियर और अन्य जिम्मेदारियों के साथ-साथ अपने घर की जिम्मेदारियों का भी उतने ही मनोयोग से निर्वाह कर रही हैं। ऐसी जीवनदायिनी, शक्तिस्वरूपा माता की शक्ति को मैं श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

साथियो, माँ के सिवाय संसार में ऐसी कोई हस्ती नहीं है जो उसी वात्सल्य और प्रेम से शिशु का लालन-पालन कर सके जैसे कि माँ करती है। संसार में चेतना के आविर्भाव का श्रेय नारी को ही जाता है। इसमें किंचित मात्रा भी संदेह नहीं है कि नारी ही वो शक्ति है जो समाज का पोषण से लेकर संवर्धन तक करती है।

उस नारी के स्वास्थ्य की चिंता न केवल हमारा धर्म है बल्कि हमारा कर्तव्य भी है। हम सभी लोग इस अभियान के माध्यम से उनको पोषण प्रदान करने के लिए काम कर रहे हैं जिनके ऊपर हमारी अगली पीढ़ी को जन्म देने की जिम्मेदारी है, जन्म देने और पालन-पोषण की जिम्मेदारी है। मातृ और शिशु, दोनों की उचित देखभाल करना हम सबका परम कर्तव्य है। स्वस्थ और सुरक्षित मातृत्व ही हमारे स्वस्थ और सुरक्षित देश की निशानी है। मुझे विश्वास है कि इस अभियान के सुपरिणाम होंगे और माता और शिशु दोनों स्वस्थ एवं सुरक्षित रहेंगे।

हमारे देश में एक ओर मातृत्व को जहां काफी महत्व दिया जाता है, वहीं किशोरियों एवं महिलाओं में पोषण की अल्पता एक बड़ी समस्या है।

कोटा-बूंदी संसदीय क्षेत्र की कच्ची बस्तियों में 5000 महिलाओं एवं किशोरियों की स्क्रीनिंग के दौरान करीब 1000 ऐसी महिलाएं एवं किशोरियां चिन्हित की गईं जिनमें पोषण की कमी पाई गई। अभावग्रस्त एवं वंचित वर्ग में यह समस्या दूर करना हम सबका सामूहिक दायित्व है।

इसी दृष्टिकोण से कोटा-बूंदी संसदीय क्षेत्र में 'सुपोषित मां अभियान' संचालित किए जाने का निर्णय लिया गया है। अभियान के तहत चिन्हित महिलाओं एवं किशोरियों को आगामी 9 माह तक 17 किलो की पोषण किट उपलब्ध करवाई जाएगी। इस किट में वह सभी सामग्री होंगी जिनका सेवन पोषण के लिए आवश्यक है। इसके अतिरिक्त इन महिलाओं एवं किशोरियों की प्रतिमाह चिकित्सकीय जांच कर परामर्श व दवाएं भी उपलब्ध करवाई जाएंगी। महिलाओं को मेडिकल कार्ड भी उपलब्ध करवाया जाएगा।

भारत के नीति-निर्माताओं ने हमेशा स्वास्थ्य व खाद्य सुरक्षा को प्राथमिकता दी है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 47 के अनुसार-राज्य अपनी जनता के पोषण और रहन-सहन का स्तर बढ़ाने व सार्वजनिक स्वास्थ्य में बढ़ोतरी को अपना मुख्य कर्तव्य मानेगा।

यदि हम कुपोषण की बात करें तो यह प्रायः तीन रूपों में देखा जाता है। पहला अल्प पोषण, दूसरा भूख और तीसरा वजन की अधिकता या मोटापा। इन तीनों से ही बच्चों का स्वास्थ्य, वृद्धि और विकास प्रभावित होता है। इससे देश और अर्थव्यवस्था को भी नुकसान पहुंचता है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के एक आंकड़े के अनुसार भारत में 5 वर्ष से कम आयु के 35 प्रतिशत से अधिक बच्चे अविकसित हैं। यह विचारणीय बिन्दु है। इसी को ध्यान में रखते हुए हमें सभी लोगों को पोषण के प्रति जागरूक करना है। इसके लिए निरंतर प्रयास करना है।

वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने पूरी दुनिया के लिए 17 सतत् विकास लक्ष्य निर्धारित किए हैं। उनमें दूसरे स्थान पर ही भुखमरी की समाप्ति, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण की बात की गई है। यदि विश्व को 2030 तक सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना है तो माताओं, बच्चों और युवाओं के पोषाहार में निवेश करना जरूरी है।

इसी को ध्यान में रखते हुए भारत ने अल्प पोषण और कुपोषण की दरों में तेजी से सुधार किया है। पिछले दो दशकों में इस दिशा में उल्लेखनीय कदम भी उठाए गए हैं जैसे विद्यालयों/स्कूलों में मिड डे मील की शुरुआत, आंगनबाड़ियों में गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं को राशन एवं गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करने वाले लोगों को पीडीएस की सहायता से अनाज उपलब्ध कराना।

पोषण अभियान के अंतर्गत गर्भवती महिलाओं, दुग्धपान कराने वाली माताओं, बच्चों और किशोरियों की पोषाहार स्थिति में सुधार लाने के लिए ठोस प्रयास किए जा रहे हैं।

8 मार्च, 2018 को राजस्थान के झुंझुनू में पोषण अभियान की शुरुआत माननीय प्रधान मंत्री जी ने की। इस प्रकार 9046 करोड़ रुपये के तीन वर्षीय राष्ट्रीय पोषण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

मुझे प्रसन्नता है कि पोषण अभियान के अंतर्गत वर्ष 2017-18 में 315 जिले, वर्ष 2018-19 में 235 जिले और बाकी बचे जिले वर्ष 2019-20 में लिये जा रहे हैं।

भारत के 599 जिलों में से पोषण इंडेक्स में कोटा 222वें स्थान पर है। ये हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम सब मिलकर कोटा-बूंदी क्षेत्र की पोषाहार स्थिति को बेहतर बनाएं। ऐसा करने में यह अभियान अपनी भूमिका निभाएगा। पोषण अभियान दरअसल कई मंत्रालयों/विभागों के साथ-साथ पोषाहार केन्द्रित योजनाओं और कार्यक्रमों को मिलाकर बनाया गया एक अभियान है।

पोषण अभियान की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि सभी स्टेकहोल्डर्स एक टीम की तरह काम करें। इसमें राज्य सरकारों, स्थानीय स्वशासन एवं अन्य सभी एजेंसियों सहित सभी स्टेकहोल्डर्स की बड़ी भूमिका है। 'सही पोषण-देश रोशन'। सच है कि लोगों की साझेदारी से ही कुपोषण से पार पाना संभव है।

इस अभियान के अंतर्गत प्रत्येक गांव के आंगनवाड़ी केन्द्र को पोषाहार, स्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा सेवाओं का एक सजीव केन्द्र बनना होगा। इसके लिए स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत स्वच्छता को बढ़ावा दिया जा रहा है। खुले में शौच की कुप्रथा को भी समाप्त किया जा रहा है। मिशन इंद्रधनुष के अंतर्गत गर्भवती महिलाओं और दो साल तक के बच्चों को सभी उपलब्ध टीके लगवाए जा रहे हैं।

इसी प्रकार 'एनीमिया मुक्त भारत' कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों, किशोरों और महिलाओं के बीच 'टेस्ट, ट्रीट एण्ड ट्रैक' के माध्यम से एनीमिया को कम करने तथा साथ ही, सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत लड़कियों की शिक्षा के लिए किए जा रहे प्रयास किए जा रहे हैं।

पोषण अभियान केवल सरकार का कार्यक्रम नहीं बल्कि एक जन आंदोलन है, इसके लिए स्थानीय निकायों के जन प्रतिनिधियों, राज्य के सरकारी विभागों, सामाजिक संगठनों और सरकारी तथा निजी क्षेत्रों की समावेशी भागीदारी की आवश्यकता है।

इस जन आंदोलन को जारी रखने के लिए हमें भारी संख्या में जन-बल की आवश्यकता है जिनमें आंगनवाड़ी कामगार और आशा कर्मी, एनसीसी कैडेट्स, एनएसएस तथा भारत स्काउट गाइड सहित कई स्वयंसेवक प्रमुख हैं। ये सभी मिल कर पोषण के संदेश को घर-घर तक पहुंचाने के संकल्प को एक सामूहिक मिशन के रूप में समयबद्ध तरीके से पूरा करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं मानता हूँ कि पंचायत से लेकर संसद तक चुने हुए जन प्रतिनिधि कुपोषण के खिलाफ हमारी लड़ाई में एक बड़ी भूमिका निभा सकते हैं।

संसद सदस्यगण अपने सांसद निधि का उपयोग पोषाहार उपलब्ध कराने के लिए कर सकते हैं जिसके अंतर्गत वे कई योजनाओं यथा मॉडल आंगनवाड़ी केन्द्रों का निर्माण, आंगनवाड़ी केन्द्रों में सुविधाएं बढ़ाने, आदि के लिए धन उपलब्ध करा सकते हैं। पोषाहार संबंधित कार्यों के लिए कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) कोष से अधिक आबंटन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

मैं एम्स, आईआईटी, आईसीएमआर, आईसीएआर, एनआईएन जैसे अनुसंधान तथा शैक्षणिक संस्थानों से भी अनुरोध करूंगा कि वे साक्ष्य आधारित अनुसंधान करके पोषाहार के क्षेत्र में ज्ञान की कमी को दूर करें एवं नई तकनीक का उपयोग करके शीघ्र ही सम्पूर्ण समाज को पूर्ण पोषण प्रदान करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

पोषण हमें एक बेहतर जीवन का मौका देता है। आईए, हम मिल-जुल कर एक ऐसा समाज बनाएं जिसमें प्रत्येक शिशु, युवा और युवती विशेषकर गर्भवती माताओं को पोषक, सुरक्षित, सस्ता आहार उपलब्ध हो जिससे वो अपने जीवन को बेहतर बना सके।

मैं इस पावन मंच से यह भी आह्वान करना चाहता हूँ कि गर्भवती माताओं को समुचित पोषण दिलाने के उद्देश्य से सभी सामाजिक संस्थाएं, समाज और व्यक्ति आगे आएँ और उन माताओं को एडॉप्ट करें ताकि अगले 9 माह तक उनके लिए सुपोषित भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित हो सके। आप सभी सुधीजनों का इस अभियान से जुड़ने का विनम्र अनुरोध है और मुझे विश्वास भी है कि कोटा के लोग इस अभियान से जुड़ने में अपने-आपको गौरवान्वित महसूस करेंगे।

मैं इस अभियान से जुड़कर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ तथा अपनी ओर से हर स्तर पर एवं हर प्रकार की संभव सहायता देने और भागीदारी करने की इच्छा भी रखता हूँ।

यह अभियान समुदाय और सामाजिक कार्यकर्ताओं की सहायता से ही सफल हो सकता है। इस उद्देश्य को जन आंदोलन और पोषण संबंधी लक्ष्यों पर सीधा प्रभाव डालने वाली विभिन्न योजनाओं के समन्वित कार्यान्वयन के द्वारा ही पूरा किया जा सकता है।

मैं कोटा ग्रेन एंड सीड्स मर्चेन्ट एसोसिएशन, जननी सामाजिक और स्वास्थ्य संस्थान, समाज कल्याण संगठनों और कोटा के प्रबुद्ध नागरिकों को आगे बढ़कर इस पहल में योगदान देने के लिए धन्यवाद देता हूँ।

अपनी बात समाप्त करते हुए मैं यह आशा करता हूँ कि इस योजना से "स्वस्थ भावी पीढ़ी का निर्माण होगा।

"मातृ शिशु को दें ऐसा पोषक आहार
ताकि हो भावी पीढ़ी का निरंतर विकास,
रहे तन सदा स्वस्थ, मन बने फौलादा।"

इस पावन उद्देश्य की प्राप्ति में निश्चय ही हम सफल होंगे।
